Copyright © www.bundelkhand.in

सूखे का स्वेत पत्र

अवधेष गौतम बॉदा (मो0–09415144002)

आमुख

प्रकृति और प्राणी दोनों ही एक दूसरे के सहचर हैं। दोनों मे से किसी एक के भी द्वारा पैदा किए गए असन्तुलन से दोनों को ही अस्वाभाविक परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। प्राणियों में खासकर मानव के द्वारा लिप्सा बस प्रकृति के साथ निरन्तर की जा रही नाजायज छेड़–छाड़ भीषण प्राकृतिक असंतुलन का सामना धरती के विभिन्न भागों को करना पड़ता है। ऐसे प्राकृतिक असंतुलन कभी अवर्षण (सूखा) तो कभी अतिवर्षण (बाढ़) तो कभी भूकम्प के रूप में तबाही मचाते रहे हैं। ऐसे तमाम असंतुलन को दैवी आपदा अथवा दैवी प्रकोप के नाम से परिभाषित किया जाता रहा है।

किन्तु मानव के कथित बौद्धिक अथवा लिप्सा विकास के कारण उसने अपनी परिस्थितिकी के साथ निरन्तर ही बड़े पैमाने पर छेड़–छाड़ की है जिसके चलते यह दैवी आपदाएं अब मानव कृत हो गयी है साथ ही आवर्ती भी। ऐसी दशा में दोनों ही सहचर परिस्थितिकी और प्राणी व्यथित ही रहते हैं। यह व्यथा उन्हें और भी अधिक व्यथित करती हैं जो आपदाएं में एक दूसरे के साथ अधिक घनिष्ठता के सम्बन्ध रखते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो जिस भू–भाग का मानव प्रकृति के साथ जितनी नजदीकी बनाकर रखता है उतना ही बुरा प्रभव ऐसी आपदाओं का उस पर पड़ता है। बुन्देलखण्ड का भाग ऐसा ही एक महत्वपूर्ण भाग है। यहां के लोगों की आजीविका का प्रमुखतः श्रोत कृषी है और यहां की कृषि वर्षा पर ही आधारित है।

बुन्देलखण्ड में चित्रकूट मण्डल भी इसी परम्परा का एक भाग है। यहां कभी सूखा तो कभी बाढ़ आवर्ती रूप से अपनी हाजिरी देते हैं। बाढ़ तो आती है और झकझोरती हुयी निकल जाती है। किन्तु सूखा जिसके तो कभी–कभी पद चाप भी नहीं सुनाई पड़ते लेकिन वह यहां के बाशिन्दों को इनके आधार से हिलाकर ही फेंक देता है ऐसा सूखा जिसके आने पर शोर शराबा होता है उसकी तो अलग बात है किन्तु वह सूखा जिसके पदचाप भी नहीं सुनाई पड़ते उसने तो गांवों में गांव के प्रति ग्रामीणों में गहरा अविश्वास ही पैदा कर दिया है। कुछ गांवों को अगर छोड़ दिया जाये तो चित्रकूट मण्डल जनपद के प्रत्येक गांव में वहां के वाशिंदों के मन में अपने ही गांव के प्रति गहरे अविश्वास के प्रतीक स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ जायेंगे।

जनपद में कोई ही गांव ऐसा हो जिसके एक तिहाई घर उजड़कर खण्डहर न हो गए हों तथा जहां के आधे से अधिक नौजवान रोजगार की तलाश में पलायन न कर जाती हो। बाहर रोजगार में यदि उन्हें लाभ होता है तब वह अपना परिवार लेकर वहीं बस जाते हैं अपने जन्म भूमि अपने गांव को वह भूल जाते हैं।
हमारी सरकारों और हमारे प्रशासन ने हमेशा ही ऐसी विभीषिकाओं से निपटने की ढेर सारी योजनाएं बनाई हैं उन पर अमल भी किया है किन्तु ऐसी योजना में जनाधार के अभाव के कारण जन सहभागिता नहीं विकसित हो सकी परिणाम स्वरूप ऐसी योजनाएं तात्कालिक बचाव और राहत के रूप में तो खूब कारगर रही किन्तु समग्र दैवी आपदा प्रबंधन कि दिशा में असरकारी साबित नहीं हो सकी।

उपरोक्त तथ्यों के मद्देनजर राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय वालण्टरी हेल्थ एसोसिएशन (विहाई) तथा वाण्टरी ऐक्शन नेटवर्क इंडिया के (वानी) संयुक्त प्रयासों से .....(पदम) तथा उत्तर प्रदेश में उत्तर प्रदेश वालण्टरी ऐक्शन नेटवर्क (उपवन) ने सूखा प्रबन्धन प्रकोष्ठ का गठन कर शासन तथा प्रशासन को जनाधार तथा जनसहभागिता के क्षेत्र में मदद करने की योजना बनाई है। जिसके प्रथम चरण में जनपद प्रदेश तथा राष्ट्रीय स्तर पर सूखे के संदर्भ में स्वैच्छिक स्वेत पत्र जारी करने की योजना है।
कार्यक्षेत्र की दृष्टि से पंचायत अध्ययन संदर्भ केन्द्र (पास्क) बाँदा की जिम्मेदारी थी कि बुन्देलखण्ड स्तर पर ऐसा स्वेत पत्र जारी किया जाता, किन्तु संसाधनों की विपन्नता के कारण चित्रकूट मण्डल से यह प्रयास प्रारम्भ किया गया है।

Copyright © www.bundelkhand.in

आखिर सूखे का पैमाना क्या है

सूखे की स्थिति के प्रति जो धारणा बनती जा रही है उससे तो ऐसा प्रतीत होता है कि आने वाले समय में यह सोंचा जायेगा कि माह जून से सितम्बर तक पानी नहीं बरसा और नवम्बर से जनवरी तक पानी झमा–झम बरस गया तो सूखा समाप्त। दूसरी तरफ सरकार के द्वारा स्थापित किए गए वर्षा मापी यंत्रों के ऊपर यदि पानी बरस गया तब तो प्रमाणिक तौर पर सूखा समाप्त हो ही गया।
जब की वास्तविकता ऐसी नहीं है। चित्रकूट मण्डल में गांवों के निरक्षर किसान मजदूरों के तथ्यों में गणितीय आंकड़े भले नहीं है किन्तु उनके तथ्य अन्तर्राष्ट्रीय सूखे के मानको के आधार पर एक दम खरे उतरते हैं। सूखे के अन्तर्राष्ट्रीय मानक निम्न प्रकार हैं।

सूखे के अन्तर्राष्ट्रीय मानक

1. पल्मर (संयुक्त राज्य अमेरिका) के अनुसार 'समय का वह अन्तराल जो समान्यतः महीनों अथवा वर्ष का हो जिससे वास्तविक आद्रता स्थान पर जलवायु की सामान्य आद्रता से काफी न्यून होती है।'
2. संयुक्त राज्य मौसम ब्यूरो के अनुसार 'सूखा एक शुष्क मौसम का वह सुवीर्य अन्तराल है जिसमें फसल की हानि होती है।'
3. कार्नवेट के अनुसार 'सूखा एक ऐसी दशा है जब वांछित पानी की मात्रा मिट्टी में पानी की मात्रा से ज्यादा होती है।'
4. ब्रिटिश वर्षा संगठन के अनुसार 'एक व्यवहारिक सूखा लगभग 28 या अधिक दिनों का अन्तराल है जिससे प्रतिदिन होने वाली वर्षा बहुत कम होती है और परम (एबस्ल्यूट) सूखा लगातार 15 दिनों का वह अन्तराल है जिसमें वर्षा 0–25 मिमी. से अधिक नहीं होता है।'
5. आस्ट्रेलियन मेट्रोलाजी ब्यूरो के अनुसार सूखे को किसी विशेष उद्देश्य के लिए न्यूनतम आवश्यकता के सिद्धान्त पर परिभाषित किया जा सकता है। इस संस्था के अनुसार 'सूखा तभी पड़ता है जब वर्षा, समय अन्तराल में न्यूनतम वर्षा, जलावश्यकता से कम होती है।'
6. यू.एस.एस.आर. में सूखा 10 दिवस का वह समय अन्तराल माना जाता रहा है जिसमें कुल वर्षा 5 मिमी से अधिक नहीं होती है।
7. सूखा शोध यूनिट, आई.एम.डी. पूना द्वारा सूखा क्षेत्र की परिभाषा इस प्रकार की गयी है 'सूखा वह स्थिति है जब किसी क्षेत्र में वर्ष में वार्षिक वर्षा सामान्य वर्षा से 75 प्रतिशत से कम होती है और वर्षा में जब जल की कमी सामान्य से 50 प्रतिशत से अधिक होती है तो इसे गंभीर सूखा की संज्ञा दी जाती है।' जिस क्षेत्र में वर्षा के दौरान सूखे का प्रभाव 20 प्रतिशत होता है, वह क्षेत्र 'सूखा क्षेत्र' कहा जाता है। यहां इसका प्रभाव वर्ष में 40 प्रतिशत पड़ता है वह क्षेत्र 'अंतिम सूखा क्षेत्र' माना जाता है।

सूखे का वर्गीकरणः–

सूखे का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता हैः–

1. मेट्रोलाजिकल सूखाः– यह तब होता है जब किसी क्षेत्र विशेष में सामान्य अवक्षेपण में सार्थक (95 प्रतिशत से अधिक) गिरावट आती है।

2. हाईड्रोलाजिकल सूखाः– मेट्रोलाजिकल सूखे का समय अन्तराल जब अधिक लम्बा हो जाता है तो वह हाईड्रोलाजिकल सूखा कहलाता है। इसमें भूमि के सतह पर स्थित जल में अधिक कमी हो जाती है। नदी, नाले, झरने आदि सूख जाते हैं एवं अभीष्ट जल स्तर में अत्याधिक कमी हो जाती है। मौसमी वर्षा न पड़ने के कारण जल विद्युत परियोजनाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है एवं उद्योग एवं कृषि प्रक्षेत्र उल्लेखनीय रूप से प्रभावित होते हैं।

Copyright © www.bundelkhand.in

3. कृषि संबंधी सूखाः— यह तब घटित होता है जब फसल की वृद्धि के दौरान में मिट्टी में नमी की अत्याधिक कमी एवं वर्षा का प्रभाव फसलों को पकने के पूर्व ही सुखा देता है, कृषि संबंधी सूखा कहलाता है। सूखे की घटना उस समय घटित होती है जब सप्ताह भर की वर्षा सामान्य वर्षा की आधी या उससे कम होती है।

सूखे के परिणामः—

- प्रति हेक्टेयर उपज का अपेक्षा से कम होना।
- पेदावार प्रतिवर्ष परिवर्तित होना—घटना या बढ़ना।
- कृषकों की सामाजार्थिक स्थिति सामान्यतः अच्छी न होना।
- कृषि श्रमिकों की स्थिति दयनीय होना।

चित्रकूट मण्डल के आंकड़े

सूखे की वास्तविक स्थिति जानने के लिए इसके दो तरह के आंकड़े देखने की आवश्यकता है। एक तो वह आंकड़े जो जन सामान्य की ओर से प्रस्तुत किये जाते हैं यानी जमीनी हकीकत से सम्बन्ध रखते हैं। जो सूखे के वास्तविक प्रभावों को दर्शातें हैं। तथा दूसरे वह आंकड़े जो सरकार के निर्देशन पर प्रशासन एकत्र करता है। जिनका उपयोग प्रशासन अपने स्तर पर अपने ढंग से अपने लिए एकत्र करता है और इन्हें गोपनीय बताया जाता है।

लोगों के आंकड़ें

गांवों के आम आदमी के पास अपनी कोई आवाज नहीं है अतः इसके अपने आंकड़े प्राथमिक तौर पर उजागर ही नहीं हो पाते। किन्तु समाचार पत्र निश्चित रूप से ऐसे ग्रामीणों की आवाज बनने की कोशि करते हैं किन्तु यहॉ भी पहुंच का संकट है। फिर भी कुछ बातें आवश्यक उजागर हो जाती हैं।

कथन

श्री नरेन्द्र कुमार पालीवाल

ग्राम भरखरी तहसील हमीरपुर जिला हमीरपुर

इस वर्ष 2002 के माह जून—जुलाई में वर्षा न होने तथा अधिक तेज धूप निकलने के कारण तापमान बढ़ने से जहां एक ओर दुधारू पशुओं का दूध घटकर एक चौथाई हो गया वहीं बैलों द्वारा खेती करने वाले किसानों को भूसा भी समाप्त हो गया है क्योंकि हरा चारा न मिल पाने के कारण पशुओं के लिए सिर्फ भूसा ही भोजन रह गया है। ट्रैक्टर से खेती करने वाले किसानों को भी रबी की फसल में दोहरी मेहनत तथा दोहरा खर्च वहन करना पड़ेगा। ऐसी स्थिति में यह कहना कि सूखा समाप्त हो गया है एकदम बेमानी है।

श्री प्रकाश चन्द्र निषाद (लघु कृषक)

ग्राम पढ़ोरी तह. मौदहा जि. हमीरपुर

समय से पानी न बरसने के कारण हम छोटे किसानों के जानवरों को तो कष्ट है ही हमारे परिवारों को भी ज्वार, मूंग, तिली, उड़द एवं अरहर आदि के अभाव के कारण भारी कठिनाइयां झेलनी पड़ेगी। चूंकि खरीफ की फसल से मिलने वाली उपज हमारे जीवन का अवलम्ब है। इसके अभाव में हमें तथा बच्चों को पूरे वर्ष भर गेहूं की रोटी चटनी के साथ खानी पड़ेगी। क्योंकि हम गरीब लोग दालें तथा सब्जी खरीद कर नहीं खा सकते। अब वर्षा होने से रबी की फसल होने की उम्मीद बंध गयी है फिर भी खरीफ की फसल की भरपाई कैसे हो सकती है?

Copyright © www.bundelkhand.in

श्री नरेन्द्र कुमार निगम

ग्राम टीहर विकास खण्ड मुस्करा तह. मौदहा जिला हमीरपुर

छोटे किसानों के लिए खरीफ की फसल बहुत बड़ा आधार होती है। इस वर्ष वर्षा के अभाव में यह फसल बर्बाद हो चुकी है। यह कहना कि अब पानी बरसने से सूखा नहीं रह गया सरासर अन्याय है। सरकार को चाहिये कि छोटे किसानों की बरबाद हुई खरीफ की फसल की भरपाई करें। क्योंकि यहॉ का किसान रबी की फसल की बुआई करने का समय भी नहीं रह गया है।

श्री उदयभान सिंह

ग्राम पिपरौंदा तह. मौदहा जि. हमीरपुर

बुन्देलखण्डी कहावत 'का वर्षा जब कृषि सुखाने' इस वर्ष चरितार्थ हो गयी है। हमारी यहां खेतों में एक ही फसल ली जाती है। खरीफ या रबी की। खरीफ की फसल नष्ट होने के बाद छोटे किसानों का आधार ही समाप्त हो गया है। अब वर्षा होने से रबी की फसल की उम्मीद तो की जा सकती है किन्तु पूरा भरोसा नहीं किया जा सकता। सरकार को चाहिये कि खरीफ की फसल का नुकसान का मुआवजा दे।

सरकारी आंकड़े

सरकार के आंकड़े वैज्ञानिक उपकरणों के माध्यम से वैज्ञानिक पद्धति द्वारा एकत्र किए जाते हैं अतः यह देखने में सुन्दर, क्रमबद्ध तथा खेल खेलने के लिए तो उपयुक्त होते हैं किन्तु मनुष्य की भावनाओं को परिभाषित करने में सर्वथा असफल रहते हैं। बावजूद इसके अपनी क्रमबद्धता एकरूपता की वजह से यह अपनी ख्याति पर्याप्त बना चुके हैं। इतना ही नहीं जमीनी हकीकत को सत्यापित करने में यह कभी–कभी बहुत मदद भी करते हैं। इसलिये सूखे के क्षेत्र मे इन आंकड़ों का भी पर्याप्त महत्व है।

जनपद चित्रकूट में वार्षिक वर्षा मि.मी. में

माह	वर्ष			
	1999	**2000**	**2001**	**2002**
जनवरी	18.55	00.00	00.00	4.00
फरवरी	18.52	00.00	00.00	00.00
मार्च	00.00	00.00	9.02	00.00
अप्रैल	00.00	00.00	11.00	3.56
मई	13.50	11.01	6.05	3.00
जून	61.00	161.50	250.90	34.50
जुलाई	410.54	348.05	553.90	28.80
अगस्त	419.08	237.52	290.00	424.15
सितम्बर	520.40	233.15	24.50	—
अक्टूबर	52.15	00.00	76.50	—
नवम्बर	00.00	00.00	8.50	—
दिसम्बर	00.00	00.00	00.00	—
योग	1513.71	991.23	1229.87	497.51

Copyright © www.bundelkhand.in

जनपद बांदा वार्षिक वर्षा मि.मी. में

माह	वर्ष				
	1998	**1999**	**2000**	**2001**	**2002**
जनवरी		00	00.00	00.00	03.00
फरवरी		15.3	00.00	00.00	14.00
मार्च		00	00.00	00.00	00.00
अप्रैल		00	00.00	12.00	01.00
मई		03.5	37.00	15.10	39.80
जून	25.8	133.1	116.00	85.70	24.9
जुलाई	202.5	191.6	164.40	263.60	42.2
अगस्त	334.5	214.6	306.1	179.00	479.2
सितम्बर	115.6	338.1	90.2	29.80	272.73
अक्टूबर	00	18.00	00.00	22.0	08.1
नवम्बर	00	00	00.00	01.00	
दिसम्बर	00	00	00.00	00.00	
योग	678.4	914.2	713.7	607.6	877.63

जनपद हमीरपुर में वार्षिक वर्षा मि.मी. में

माह	वर्ष			
	1999	2000	2001	2002
जनवरी	10.7	—	4.3	—
फरवरी	7.3	—	—	—
मार्च	—	—	—	30.8
अप्रैल	—	—	62.9	22.5
मई	8.2	34.3	10.5	13.00
जून	60.8	170.2	186.3	1.2
जुलाई	270.00	130.00	485.5	35.3
अगस्त	230.8	450.00	131.6	208.9
सितम्बर	459.3	108.00	20.3	22.8 तक
अक्टूबर	58.4	1.9	10.8	
नवम्बर	3.2	—	—	
दिसम्बर	9.7	—	—	
योग	1096.6	894.4	912.2	334.5

Copyright © www.bundelkhand.in

जनपद महोबा में वार्षिक वर्षा मि.मी. में

माह	वर्ष			
	1999	2000	2001	2002
जनवरी	6.7	—	5.5	—
फरवरी	6.9	—	—	—
मार्च	1.3	—	—	38.7
अप्रैल	—	—	62.5	17.00
मई	12.5	33.8	11.2	12.3
जून	70.3	170.2	188.3	1.1
जुलाई	258.2	131.6	491.4	32.1
अगस्त	241.8	443.2	140.00	204.2—21.8 तक
सितम्बर	457.3	114.8	17.3	
अक्टूबर	61.2	2.2	8.7	
नवम्बर	—	—	—	
दिसम्बर	8.6	—	—	
योग	1124.8	895.8	924.9	364.4

आंकड़ों की समीक्षा

लोगों के आंकड़े समस्या, समस्या के कारण तथा उस समस्या के परिणाम तथा परिणाम के विभिन्न स्वरूपों को एक मात्र सीधी सपाट भाषा में आदि से अंत तक अपनी व्यथा कथा कह जाते हैं। किन्तु सरकारी आंकड़े कुछ संकेतक मात्र होते हैं। जिनका विश्लेषण किए बिना जमीनी हकीकत को नहीं समझा जा सकता दूसरे शब्दों में आंकड़ें किसी समस्या अथवा समाधान की आशुलिपि है, जिसे उनका लेखक किन्हीं अर्थों में तथा कोई भी पाठक किन्हीं अन्य अर्थों में समझता है। आवश्यकता यह है कि आशुलिपि की इस भाषा में पढ़ा जाये कि जिसका अर्थ जन के हित निकले जमीनी हकीकत उजागर हो तथा समस्या समाधान के सार्थक तथा स्थाई हल खोजे जा सके। सरकारी इन आंकड़ों को कुछ ऐसे ही संदर्भों में यह कोशिश की गयी है। चित्रकूट मण्डल के उक्त चारो जनपद चित्रकूट, बांदा, महोबा तथा हमीरपुर के वार्षिक वर्षा के आंकड़ों से निम्न बातें स्पष्ट होती हैं।

- मण्डल में सर्वाधिक वर्षा चित्रकूट जनपद में होती है जहां का आधा भाग पठारी है जहां खेती की सम्भावना नाम मात्र की है। जिले के कुल क्षेत्रफल के 22 प्रतिशत जंगल हैं जहां पर बर्षा पानी उपयोग में नहीं लगाया जा सकता।
- मण्डल का जनपद बांदा नाना प्रकार की उपजाऊ भूमि की धनी है किन्तु यहां की वर्षा पिछले चार वर्षों से कभी भी अपनी औसत सीमा को नहीं छू सकी लगभग प्रति वर्ष ही यहां सूखे जैसी स्थिति रहती है।
- मण्डल के जनपद महोबा तथा हमीरपुर में यद्यपि वर्षा कभी औसत सीमा को भी पार करती है किन्तु यहां भी अनावृष्टि दस्तक देती रहती है।

वर्षा के आंकड़े (वर्षा—मि.मी. में)

तहसील वाइज—जनपद बाँदा

दिनांक	बाँदा	बबेरू	नरैनी	योग	औसत वर्षा
1.8.2002	—	—	—	—	—
2.8.2002	—	—	—	—	—

Copyright © www.bundelkhand.in

3.8.2002	42.0	4.0	—	46.0	15.3
4.8.2002	—	—	—	—	—
5.8.2002	67.0	8.0	2.0	72.0	25.7
6.8.2002	5.4	45.6	—	21.0	7.0
7.8.2002	—	19.4	—	19.4	6.4
8.8.2002	1.0	4.0	—	5.0	1.7
9.8.2002	4.8	—	30.0	34.0	11.6
10.8.2002	—	—	—	—	—
11.8.2002	—	—	—	—	—
12.8.2002	1.2	45.6	40.0	86.8	28.9
13.8.2002	83.6	8.6	60.0	152.2	50.1
14.8.2002	50.0	90.0	80.0	220.0	73.3
15.8.2002	21.0	3.2	—	24.2	8.0
16.8.2002	2.0	3.0	10.0	15.0	5.0
17.8.2002	7.2	21.4	40.0	68.6	22.9
18.8.2002	12.0	124.0	80.0	216.0	72.0
19.8.2002	9.0	32.6	40.0	81.6	27.2
20.8.2002	1.0	—	30.0	31.0	10.3
21.8.2002	19.0	91.2	5.0	115.2	38.4
22.8.2002	—	24.0	—	24.0	8.0
23.8.2002	21.2	2.0	90.0	113.2	37.7
24.8.2002	17.8	7.0	26.0	50.8	16.9
25.8.2002	2.8	24.0	10.0	36.8	12.2
26.08.2002	—	—	—	—	—
27.08.2002	—	—	—	—	—
28.08.2002	—	—	—	—	—
29.08.2002	8.2	—	1.0	9.2	3.1
30.08.2002	2.2	36.0	—	38.2	12.1
31.08.2002	—	—	—	—	—
योग	**378.4**	**363.6**	**544.0**	**1486.0**	**495.3**

वर्षा के आंकड़े (वर्षा–मि.मी. में)

तहसील वाइज–जनपद चित्रकूट

दिनांक	कर्वी	मऊ	योग	औसत वर्षा
1.8.2002	1.00	00.00	1.00	.50
2.8.2002	1.00	00.00	1.00	.50
3.8.2002	2.00	11.30	13.30	6.65
4.8.2002	17.00	8.00	25.00	12.50
5.8.2002	6.00	00.00	6.00	3.00
6.8.2002	7.00	4.00	11.00	5.50
7.8.2002	1.00	00.00	1.00	.50
8.8.2002	3.00	24.00	27.00	13.50
9.8.2002	2.00	4.00	6.00	3.00
10.8.2002	5.00	49.00	54.00	27.00
11.8.2002	18.00	72.00	90.00	45.00
12.8.2002	19.00	15.30	34.30	17.15
13.8.2002	135.00	52.00	187.00	93.50
14.8.2002	1.00	1.00	2.00	1.00
15.8.2002	4.00	6.40	10.40	5.20
16.8.2002	46.00	19.10	65.10	32.55
17.8.2002	11.00	24.00	35.00	17.50
18.8.2002	50.00	18.40	68.40	34.20
19.8.2002	00.00	00.00	00.00	00.00

Copyright © www.bundelkhand.in

20.8.2002	13.00	38.10	51.10	25.55
21.8.2002	58.00	24.70	82.70	41.35
22.8.2002	32.00	00.00	32.00	16.00
23.8.2002	9.00	00.00	9.00	4.50
24.8.2002	2.00	9.00	11.00	5.50
25.8.2002	00.00	00.00	00.00	00.00
26.8.2002	00.00	00.00	00.00	00.00
27.8.2002	00.00	00.00	00.00	00.00
28.8.2002	00.00	00.00	00.00	00.00
29.8.2002	24.00	00.00	24.00	12.00
30.8.2002	1.00	00.00	1.00	.50
31.8.2002	00.00	00.00	00.00	00.00
योग				423.65

तहसीलवाइज आंकड़े—औसत वर्षा मि.मी. में

माह—सितम्बर

दिनांक	बाँदा	बबेरू	नरैनी	योग	औसत वर्षा
01.09.2002	—	—	2.0	2.0	0.67
02.09.2002	—	—	—	—	—
03.09.2002	—	—	—	—	—
04.09.2002	3.6	—	40.0	43.6	14.53
05.09.2002	5.6	8.4	30.0	44.0	14.67
06.09.2002	54.0	1.2	50.0	105.2	35.07
07.09.2002	90.2	87.8	20.0	198.0	66.90
08.09.2002	68.2	34.0	40.0	142.2	47.40
09.09.2002	7.4	—	30.0	37.4	12.47
10.09.2002	7.6	—	—	7.6	2.53
11.09.2002	1.2	—	—	1.2	0.40
12.09.2002	22.6	13.8	40.0	76.4	25.47
13.09.2002	26.2	83.4	40.0	149.6	49.86
14.09.2002	—	—	—	—	—
15.09.2002	—	—	—	—	—
16.09.2002	—	—	—	—	—
17.09.2002	—	—	—	—	—
18.09.2002	—	—	—	—	—
19.09.2002	—	—	—	—	—
20.09.2002	—	—	—	—	—
21.09.2002	—	—	—	—	—
22.09.2002	—	—	—	—	—
23.09.2002	1.2	—	—	1.2	0.40
24.09.2002	—	—	—	—	—
25.09.2002	7.8	2.0	—	9.8	3.26
26.09.2002	—	—	—	—	—
27.09.2002	—	—	—	—	—
28.09.2002	—	—	—	—	—
29.09.2002	—	—	—	—	—
30.09.2002	—	—	—	—	—
योग	**295.6**	**230.6**	**292.0**	**818.2**	**272.73**

जिलेवार औसत वर्षा मि.मी. में

चित्रकूट मण्डल

Copyright © www.bundelkhand.in

माह	बांदा	महोबा	हमीरपुर	चित्रकूट
जुलाई	42.2	32.01	35.3	28.80
अगस्त	495.3	248.3	294.2	421.4
सितम्बर	272.73	86.31	171.8	257.10
अक्टूबर	08.1	—	—	—

(मंडल की वार्षिक मानक वर्षा–946.2 मि.मी)

मानसून की स्थिति

क्रं.	जनपद	मानक के अनुसार मानसून सत्र में 15 अगस्त तक औसत वर्षा	15.8.02 तक वास्त. वर्षा	वर्षा मेंकमी(मि.मी.)	वर्षा में कमी मेंकमी(%)
1	बांदा	504.00	214.00	290.00	57.54%
2.	हमीरपुर	622.00	184.60	438.20	70.36%
3.	महोबा	359.91	140.39	219.52	60.99%
4.	चित्रकूट	899.70	188.45	711.25	79.05%
5.	मण्डल योग	593.46	191.86	411.61	63.36%

मण्डल में वर्षा

जनपद	1999	2000	2001	2002
बांदा	678.4	914.2	713.7	877.63
चित्रकूट	1513.71	991.23	1229.87	497.51
महोबा	1124.8	895.8	924.9	364.4
हमीरपुर	1096.6	894.4	912.2	334.2

दैनिक वर्षा के आंकड़े और उनका प्रभाव

वार्षिक वर्षा के आंकड़ों से यह पता चलता है कि चित्रकूट मण्डल के सभी चारो जनपदों में वर्षा प्रतिवर्ष औसत वर्षा की सीमा भले न छू पाती हो किन्तु इनता बर्षात तो हो ही जाती है जिससे कृषि कार्य आसानी से सम्पादित हो सकता है लेकिन यह भी स्पष्ट होता है कि यहां वारिस के केवल चार माह ही निर्धारित हैं। जिससे स्पष्ट है कि यहां केवल मानसूनी वर्षा ही होती है चक्रवर्ती वर्षा की सम्भावनाएं न के ही बराबर हैं।

- दूसरी तरफ जब हम चित्रकूट मण्डल के जनपदों के दैनिक वर्षा का पंचांग देखते हैं तब तो कृषि कार्य की सारी सम्भावनाएं ही उलट जाती हैं। आंकड़ों के देखने से पता चलता है कि इन सभी जनपदों में वार्षिक वर्षा का 80 फीसदी मात्र अगस्त और सितम्बर के महीने में ही पूरा हो जाता।
- यह आकड़े यह भी बताते हैं कि वर्ष भर में बरसने वाले पानी का तीन चौथाई दो–दो तीन–तीन दिन की निरन्तर होने वाली वारिस में ही बहकर निकल जाता है।

चित्रकूट मण्डल में वारिस अपने औसत को भले ही नहीं छू पाती फिर भी बरसात होती तो पर्याप्त है। किन्तु आंकड़ों को देखने से पता चलता है कि बरसात केवल दो माह अगस्त तथा सितम्बर में ही होती है। जबकि यहां बरसात के चार महीने 15 जून से जुलाई, अगस्त, सितम्बर तथा 15 अक्टूबर यानी अषाढ़, सावन, भादों तथा क्वॉर तथा मानी जाती है। जून तथा जुलाई, अक्टूबर के महीनों में अक्सर सूखा ही रहता है। लेकिन अगस्त तथा सितम्बर के महीनों में यहां जोरदार वारिस होती है।

Copyright © www.bundelkhand.in

उपरोक्त आंकड़ों को देखने के बाद तो यह लगता है कि दो महीनों में होने वाली वरसात से खेती असानी से की जा सकती है फिर सूखे की चिल्ल–पों क्यों? लेकिन माह अगस्त तथा सितम्बर के दैनिक वर्षा के आंकड़े यदि देखे जायें तो हकीकत साफ हो जाती है।

यद्यपि दैनिक वर्षा के आंकड़े बांदा तथा चित्रकूट जनपदों के ही उपलब्ध हो पाए है तथापि बरसात की हकीकत जानने में यही आकड़े पर्याप्त मदद करते हैं।

उपरोक्त दैनिक वर्ष पंचाग देखने से दो महीनों में होने वाली वर्षा की स्थिति साफ हो जाती है। देखने पर पता लगता है कि वार्षिक आंकड़ों में अस्त सितम्बर माह में जोदार जो वर्षा दिखाई पड़ती है वह मात्र दो या तीन बार एक या दो दिन की जोरदार वारिस के रूप में सम्पन्न हो जाती है। पानी तो खूब ही बरसता है किन्तु परिणाम क्या देता है यह तो जरूर समझने की बात है।

जून जुलाई और आधे अगस्त तक तो लोग अवर्षण से परेशान रहते हैं लेकिन 15 अगस्त से 15 सितम्बर तक एक साथ पानी बरसता है जमीन की ऊपरी सतह को भिगोता हुआ नाले नदियों से बहता हुआ समुद्र में पुनः समा जाता है।

ऐसी बरसात से न तो किसान लाभ ले पाता है और ना ही भूगर्भ की ही पूर्ति हो पाती है। ऊपर से कोढ़ में खाज पैदा करने वाली सूखे के बाद बाढ़ का सामना करना पड़ता है, चित्रकूट मण्डल के किसानों मजदूरों को।

सूखे से निजात के प्रयास

शासन और प्रशासन से सूखे के निजात के लिए क्या प्रयास किए हैं तथा उनकी इस दिशा में क्या सोंच है यह आंकड़ों के माध्यम से देखा जा सकता है।

15.8.2002 तक वर्षा होने की स्थिति में प्रस्तावित फसल आच्छादन

क्रं. सं.	जनपद	कुल खरीफ क्षेत्रफल (हे0)में	15.8.02 तक वर्षा होने की स्थिति प्रस्तावित आच्छादन	15 अगस्त मेतक आच्छादन (हे0)में	प्रस्तावितलक्ष्य के सापेक्ष आच्छादन (%) में
1.	बाँदा	124812.00	58075.00	17270	29.47%
2.	हमीरपुर	78230.00	22348.00	30904	138.29%
3.	महोबा	50225.00	40500.00	13299	32.84%
4.	चित्रकूट	68087.00	32750.00	7494	22.88%
मण्डलयोग		321354.00	153673.00	68967	44.88%

सूखे से निपटने हेतु शासन को प्रेषित जनपदवार मांग

क्रं.	जनपद	जल संस्थान	जल निगम	पशुपालन	अन्य दवा/चारा	योग
1.	बांदा	94.074	00.000	7.250	00.000	101.324
2.	हमीरपुर	87.720	230.600	0.900	00.000	319.220
3.	महोबा	144.470	95.017	2.350	81.350	323.187
4.	चित्रकूट	193.930	106.850	3.650	00.000	304.430
मण्डल योग		520.194	432.467	14.150	81.350	1048.161

नोटः ❍ महोबा में 81.35 रूपये ऋण की मांग सिंचाई प्रखण्ड द्वारा की गयी है।

❍ मांग लाख रूपए में दर्शायी गयी है।

उपरोक्त आंकड़ों को देखने से पता चलता है कि मण्डल के चारो जनपदों का जिला प्रशासन यहां के सूखे के प्रति पर्याप्त संवेदित है। इस संवेदना से यह प्रतीत होता है कि सूखे से जितना किसान नहीं उतना तो

Copyright © www.bundelkhand.in

प्रशासन के लोग परेशान हैं और ऐसी परेशानी को देख सूखे के खिलाफ अभियान के लिए वह अधिक से अधिक सहयोग भी चाहते हैं। किन्तु इस चाहत का रहस्य क्या है? यह जानना भी बहुत जरूरी है। प्रमुख कारण तो बांदा जनपद के तत्कालीन जिलाधिकारी और मौजूदा समय में चित्रकूट मण्डल के आयुक्त डा. विनोद गुप्ता ने उजागर किया।

सूखे से निपटने के लिए रणनीति बनाने हेतु अधिकारियों की बैठक में सबको फटकार लगाते हुए उन्होंने कहा था, 'अधिकारी सूखे को अब दुधारू गाय न समझें, यह गाय अब लात भी मारने लगी है।' डा. गुप्ता की यह फटकार अपने आप में सदर्भ है सूखे के प्रति प्रसाशनिक मंशा तथा उसकी संवेदना की हकीकत समझने के लिए।

आकड़ों की यह भाषा जो दूसरी हकीकत उजागर करती है वह यह कि शासन और प्रशासन सूखा अथवा बाढ़ का स्थाई समाधान ढूढ़े बजाय इसके सूखे से प्रभावित लोगों को मात्र राहत देने की योजनाएं बनाते हैं। वह भी जब सूखा अथवा बाढ़ मानव के जीवन में अस्तित्व के लिए ही खतरा पैदा कर देता है। ऐसे राहत कार्य लोगों को कुछ दिन और जिंदा रहने के साधन तो जुटाते हैं किन्तु सूखे के स्थाई समाधान की ओर कोई प्रयास नहीं होता।

सूखे के पदचापः

पिछले मार्च के 2002 से ही सूखे के पदचाप सुनाई देने लगे थे। किन्तु उन्हें ही सुनाई पड़े जो अपने आंख, कान और नाक खोलकर रखते हैं तथा अपनी परिस्थितिकी के प्रति संवेदनशील रहते हैं।

पंचायत अध्ययन संदर्भ केन्द्र (पास्क) ने अपने कार्यालय के इलेक्ट्रानिक उपकरणों की सुरक्षा के मद्देनजर आद्रता तथा तापमान नापने के मामूली यंत्र लगा रखे हैं। विगत मार्च के महीने में तापमान तो 20 सेन्टीग्रेट न्यूनतम तथा 35 सेंटीग्रेट अधिकतम था किन्तु आद्रता 15 से 25 प्रतिशत तक पहुंच गयी। अन्दाजा लगाया जा सकता था कि मार्च के महीने में यह आद्रता दर की गिरावट अप्रैल तथा मई तक किस स्तर तक पहुंचे। अंदाजा लगाया गया कि वातावरण की यह विरलता दूर के सघन वातावरण को आकीर्ण करेगी। हुआ भी यही अप्रैल तथा मई के महीनों में यहां दूर–दूर तक जोरदार वारिस हुई तापमान में तो खास प्रभाव नहीं किन्तु आद्रता प्रतिशत दर 55 से 80 प्रतिशत तक बढ़ गयी।

आद्रता का यह स्तर थोड़े बहुत घट बढ़ के साथ यहां जून के महीने तक बना रहा। दूसरे शब्दों में यहां का वातावरण पर्याप्त रूप से सघन रहा।

परिणाम स्वरूप वातावरण की सघनता के कारण बंगाल की खाड़ी से उठने वाला मानसून इस ओर आंकीर्षत नहीं हुआ और जून, जुलाई तथा 15 अगस्त तक विहार, मध्य प्रदेश सहित पूरे उत्तर प्रदेश में सूखे का साम्राज्य कायम हो गया।

मध्य भारत में गर्मी के मौसम में सर्वाधिक गर्मी तथा आद्रता न्यून क्षेत्र बुन्देलखण्ड है। जो खुद को तपाकर मानसून को आकर्षित करता है जिस कारण सारे मध्य तथा उत्तर भारत में मानसूनी वर्षा होती है यह कहना अन्यथा नहीं है कि यदि उत्तर तथा मध्य भारत में समुचित मानसूनी वर्षा चाहिये तो बुन्देलखण्ड में आद्रता संतुलन बेहद जरूरी है।

बुन्देलखण्ड का आद्रता सन्तुलन और सरकारी नीतियांः

बुन्देलखण्ड में आद्रता सन्तुलन बनाए रखने के आदर्श प्रयास यहां के पुरातन समाज ने किए थे। अपने विशाल तालाबों के लिए बुन्देलखण्ड हमेशा ही मशहूर रहा है। यहॉ आज भी दसियों तालाब ऐसे हैं जिनसे वरसाती ही नहीं बारहमासी नदियां भी प्रवाहित होती हैं।

इतना ही नहीं बुन्देलखण्ड में खुरई, डरई, हमीरपुर, अजयगढ़, पन्ना, दलितया आदि जनपदों में हजारों हजार वीघे की हजारों बंधियां थी जिनमें बरसात का पूरा पानी एकत्र रहता था और दशहरे के दिन इनका पानी निकालकर बाद में खेती की जाती थी।

Copyright © www.bundelkhand.in

ऐसे तालाबों और बंधियों से भू–गर्भ जल का स्तर तो संतुलित रहता ही था साथ ही वातावरण ही आद्रता भी व्यवस्थित रहती जिस कारण यह वनस्पतियां जमीन को आच्छादित कर लेती थीं तथा अति शुष्क मौसम में वातावरण की आद्रता को नियंत्रित करती थी जिसमें यहां नाना प्रकार की फसलें तथा विभिन्न प्रकार की वनोपत्र लोगों की जीवनाधार बनते थे साथ ही समुचित वर्षा का कारण भी।

किन्तु प्रगतिशील खेती के नाम पर बंधियों का विनाश कर दिया गया। मछली तथा सिघाड़ा उत्पादन के नाम पर तालाब व्यक्तिगत मालिकी में दे दिए गए तथा बड़े तालाबों के किनारे शहर वस गए जिससे या तो तालाब पाट दिए गए या फिर शहर के कूड़ा घरों में तब्दील हो गए।

ऐसी सरकारी नीतियों के कारण यहां निरन्तर आद्रता का क्षरण होता गया परिणाम स्वरूप वर्षा का काल तथा मात्रा दोनों ही प्रभावित हुए जो बुन्देलखण्ड में बाढ़ तथा सूखा का कारण बनती है।

श्री शुभ संम्वत 2059 शाके 1924

माह एवं तिथि	दिनांक	नक्षत्र का नाम	वाहन	योग	प्रारम्भ का समय	नक्षत्रों में बोई जाने वाली फसलें
ज्येष्ठ शु.प. 12 शनिवार	22.6.02	आर्द्रा	मंडकू	स्त्री नपुंसक	दिन 3.23 मि.	ककड़ी, साग, साकुन
अषाढ़ कृ.प. 11 शनिवार	6.9.02	पुनर्वस	मूषक	स्त्री पुरूष	दिन 4.59 मि.	ज्वार, मूंग
अषाढ़ शु.प. 11 शनिवार	20.7.02	पुष्य	अस्व	स्त्री नपुंसक	सांय 6.43मि.	बाजरा
श्रावण कृष्ण 10 शनिवार	3.8.02	अश्लेषा	चातक	स्त्री पुरूष	सांय 6.44 मि.	
श्रावण शुक्ल 10 शिनवार	17.8.02	मघा	नाग	स्त्री नपुंसक	सांय 5.32मि.	उड़द
भाद्रपद कृ.प. 8 शनिवार	31.8.02	पूर्वा फाल्गुनी	मंडूक	स्त्री पुरूष	दिन 2.11 मि.	
भाद्रपद शु.प. 8 शनिवार	14.9.02	उ.फाल्गुनी	महिष	स्त्री नपुंसक	दिन 8.24 मि.	
आश्विन कृ.प. 6 शुक्रवार	29.9.02	हस्त	अस्व	स्त्री नपुसंक	रात्रि 11.45मि.	सरसों चना,मसूर

अल्प वृष्टि एवं सूखा के कारण

1. प्रायः वर्षा कालीन सभी नक्षत्र शनिवार को लगने के कारण क्योंकि दिन शनिवार को नक्षत्र प्रारम्भ अशुभ सूचक है।
2. प्रायः 8,10,11,12,6 ये तिथियां अल्प वृष्टि योग बनाती हैं। इस वर्ष लगभग सभी नक्षत्र इन्हीं तिथियों में प्रारम्भ हुए हैं।
3. प्रायः सभी नक्षत्र अपरान्ह के बाद लगे हैं।
4. नक्षत्रों में अधिकतर स्त्री नपुसंक योग रहा जो अल्प वृष्टि का सूचक है।
5. सं. 2059 का राजा शनि एवं मेघेश भी शनि रहा जो अल्प वृष्टि का सूचक है।
6. संवत् का निवास रजक के घर में रहा जो पानी कम चाहता है।
9. ज्योतिषीय आधार में–

1/2 वर्षा पहाड़ों में

1/4 हवा में

1/4 पृथ्वी में होती है।

इस वर्ष 12 विस्वा कुल वर्षा थी उपरोक्त आंकड़ों के अनुसार मात्र 3 विस्वा वर्षा पृथ्वी पर हुई जो सूखा का प्रमुख कारण रहा।

पं. उमानाथ मिश्रा

ग्राम–सोनामऊ

Copyright © www.bundelkhand.in

Join SMS Alerts And Get Bundelkhand News Alerts in Your Mobile:
>> http://labs.google.co.in/smschannels/subscribe/bundelkhand

Find us at FACEBOOK:
>> http://www.facebook.com/bundelkhand

Visit Our Website:
>> http://www.bundelkhand.in

Thank You..

Copyright © www.bundelkhand.in